05-July-2024
Friday

Date :
P. No. : 07

पाठ -

बाजार दर्शन

(जैनेंद्र कुमार)

प्रश्न: 1 बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

उत्तर: 1 जब बाजार का जादू चढ़ता है, तो व्यक्ति फ़िजूल की खरीदारी करता है, वह उस सामान को खरीद लेता है, जिसकी उसे जरूरत नहीं होती, वास्तव में जादू का प्रभाव गलत या सही की पहचान खत्म कर देता है, लेकिन जब यह जादू उतरता है, तो उसे पता चलता है, कि बाजार की चकाचौंध ने उन्हें मूर्ख बनाया है, जादू के उतरने पर वह केवल आवश्यकता का ही सामान खरीदता है, ताकि उसका पालन-पोषण हो सके।

प्रश्न: 2 बरार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू उभरकर आता है? क्या आपकी नजर में उनका आचरण समाज में शांति-स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

उत्तर: 2 बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का यह सशक्त पहलू उभरकर आता है, कि उनका अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण है, वे बाजार में आँखें खोलकर चलते हैं, बाजार की चकाचौंध उन्हें आश्चर्य में नहीं डालती, उनका मन भरा हुआ होता है, अतः

बाजार का जादू उन्हें बाँध नहीं पाता, उनका मन अनावश्यक वस्तुओं के लिए विद्रोह नहीं करता, उनकी जरूरत निश्चित है, उन्हें जीरा व काला नमक खरीदना होता है, वे केवल दुकान पर रुककर अपना सामान खरीदते हैं, ऐसे व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। क्योंकि इनकी दिनचर्या संतुलित होती है।

प्रश्नः 3 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है?

उत्तरः 3 'बाजारूपन' से तात्पर्य है कि बाजार की चकाचौंध में खो जाना, केवल बाजार पर ही निर्भर रहना वे व्यक्ति ऐसे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं जो सामान खरीद लेते हैं, जिनकी उन्हें जरूरत भी नहीं होती, वे फिजुल में सामान खरीदते रहते हैं अर्थात् वे अपना धन और समय नष्ट करते हैं। लेखक कहता है, कि बाजार की सार्थकता तो केवल जरूरत का सामान खरीदने में ही है, तभी हमें लाभ होना।

प्रश्नः 4 बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता; वह देखता है सिर्फ उसकी क्रय शक्ति को इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर: 4 यह बात बिल्कुल सही है, कि बाजार किसी का जाती धर्म या क्षेत्र नहीं वह सिर्फ ग्राहक की क्रय शक्ति को देखता है, उसे इस बात से कोई मतलब नहीं की खरीदार कौन है, वह हिंदू है या मुस्लिम या वह किस क्षेत्र विशेष से है, बाजार में उसी को महत्व मिलता है, जो अधिक खरीद सकता है, यहाँ हर व्यक्ति ग्राहक होता है। आज जीवन के हर क्षेत्र नौकरी, राजनीति, धर्म, आवास आदि में भेदभाव है ऐसे में बाजार हर एक को समान मानता है, यहाँ किसी से कोई भेदभाव नहीं किया जाता, क्योंकि बाजार का उद्देश्य सामान बेचना है।

प्रश्न: 5 (i) जब पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ —

उत्तर: (i) समाज में ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जिसमें पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ, निठारी कांड में पैसे की ताकत साफ दिखाई देती है, गरीब बच्चों को मारकर दुख सताने वाले के खिलाफ मुकदमा भी चलाया गया तथा उस पर गबन करके दोष कर दिया गया

(ii) जब पैसे की शक्ति काम नहीं आयी —

उत्तर: (ii) समाज में अनेक उदाहरण ऐसे भी हैं, जहाँ पैसे की शक्ति काम नहीं आती, जैसे - जे. सी. का लाल हत्याकांड में अपराधी को अपरा धन

खर्च करने के बाद भी सजा मिली इस प्रकार पैसे की शक्ति काम नहीं आयी।

जीवनपरिचय

जीवनपरिचय ⇒

प्रसिद्ध उपन्यास-कार जैनेंद्र कुमार का जन्म 1905 ई० में अलीगढ़ में हुआ था। बचपन में ही इनके पिता जी की मृत्यु हो गयी तथा इनके मामा ने ही इनका पालन-पोषण किया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा हस्तिनापुर के गुरुकुल में हुई। इन्होंने उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस में ग्रहण की। 1921 ई० में गाँधी जी के प्रभाव के कारण इन्होंने पढ़ाई छोड़कर असहयोग आंदोलन में भाग लिया। अंत में ये स्वतंत्र रूप से लिखने लगे। इनकी साहित्य सेवा के कारण 1984 ई० में इन्हें "भारत-भारती" सम्मान मिला। भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। इनकी मृत्यु सन् 1990 में दिल्ली में हुई।

प्रमुख रचनाएँ ⇒

उपन्यास - परख, अनाम स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्धन, मुक्तिबोध।

कहानी - संग्रह - वातायन, एक रात, दो चिड़ियाँ, फाँसी, नीलम देश की राजकन्या, पाजेब।

निबंध संग्रह :- प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, सोच-विचार, समय और हम।

साहित्यिक विशेषताएँ ⇒

हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद सबसे महत्वपूर्ण कथाकार के रूप में जैनेंद्र कुमार प्रतिष्ठित हुए। इन्होंने अपने उपन्यासों व कहानियों के माध्यम से हिंदी में एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा-धारा का प्रवर्तन किया।

भाषा शैली ⇒

जैनेंद्र कुमार की पहचान अत्यंत गंभीर चिंतक के रूप में रही। इन्होंने सरल व अनौपचारिक शैली में समाज, राजनीति, अर्थनीति एवं दर्शन से संबंधित कठिन प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश की है। ये गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित थे। इन्होंने गाँधीवादी चिंतन दृष्टि का सरल व सहज उपयोग जीवन-जगत से जुड़े प्रश्नों के संदर्भ में किया है।

साहित्य में स्थान ⇒

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में प्रसिद्ध उपन्यासकार के रूप में आपका नाम सदैव स्मरणीय रहेगा।

15/7/24